॥ श्री सदाशिव ब्रह्मेन्द्र कृत कीर्तनानि ॥

॥१॥

॥ सर्वं ब्रह्ममयम् ॥

सर्वं ब्रह्ममयं रे रे । सर्वं ब्रह्ममयम् ॥
किं वचनीयं किमवचनीयम् । किं रचनीयं किमरचनीयम् ॥१॥
किं पठनीयं किमपठनीयम् । किं भजनीयं किमभजनीयम् ॥२॥
किं बोद्धव्यं किमबोद्धव्यम् । किं भोक्तव्यं किमभोक्तव्यम् ॥३॥
सर्वत्र सदा हंसध्यानम् । कर्तव्यं भो मुक्तिनिदानम् ॥४॥

॥२॥

॥ स्थिरता नहि नहि रे ॥

स्थिरता नहि नहि रे मानस । स्थिरता नहि नहि रे ॥
तापत्रय सागर मग्नानाम् । दर्पाहङ्कार विलग्नानाम् ॥ १ ॥
विषयपाश वेष्टित चित्तानाम् । विपरीत ज्ञान विमत्तानाम् ॥ २ ॥
परमहंस योग विरुद्धानाम् । बहु चञ्चलतर सुखसिद्धानाम् ॥ ३ ॥

॥३॥

॥ पिबरे रामरसम् ॥

पिबरे रामरसं रसने । पिबरे रामरसम् ॥
दूरीकृत पातक संसर्गम् । पूरित नानाविध फलवर्गम् ॥१॥
जनन मरण भय शोकविदूरम् । सकल शास्त्र निगमागम सारम् ॥२॥
परिपालित सरसिज गर्भाण्डम् । परम पवित्रीकृत पाषण्डम् ॥३॥
शुद्ध परमहंसाश्रम गीतम् । शुक शौनक कौशिक मुखपीतम् ॥४॥

॥४॥

॥ स्मर वारं वारम् ॥

स्मर वारं वारं चेतः । स्मर नन्दकुमारम् ॥
घोशकुटीर पयोघृत चोरम् । गोकुल वृन्दावन सञ्चारम् ॥१॥
वेणुरवामृत पानकठोरम् । विश्व स्थितिलय हेतुविहारम् ॥२॥
परमहंस हृत्पञ्जर कीरम् । पटुतर धेनुक बक संहारम् ॥३॥

॥५॥

॥ खेलति ब्रह्माण्डे ॥

खेलति ब्रह्माण्डे भगवान् । खेलति ब्रह्माण्डे ।
हंसः सोऽहं हंसः सोऽहम् । हंसः सोऽहं सोऽहमिति ॥ १ ॥
परमात्मोऽहं परिपूर्णोऽहम् । ब्रह्मैवाहम् अहं ब्रह्मेति ॥ २ ॥
त्वक्चक्षुः श्रुतिजिह्वाघ्राणे । पञ्चविध प्राणोपस्थाने ॥ ३ ॥
शब्दस्पर्शरसादिकमात्रे । सात्त्विकराजसतामससमित्रे ॥ ४ ॥
बुद्धिमनश्चित्ताहङ्कारे । भूजलतेजोगगनसमीरे ॥ ५ ॥
परमहंस रूपेण विहर्ता । ब्रह्मविष्णुरुद्रादिककर्ता ॥ ६ ॥

॥६॥

॥ भजरे यदुनाथम् ॥

भजरे यदुनाथं मानस । भजरे यदुनाथम् ॥
गोपवधू परिरम्भण लोलम् । गोपकिशोरं अद्भुतलीलम् ॥१॥
कपटाङ्गीकृत मानुषवेशम् । कपटनाट्य कृत कृत्स्न सुवेशम् ॥२॥
परमहंस हृत्तत्व स्वरूपम् । प्रणव पयोधर प्रणव स्वरूपम् ॥३॥

॥७॥

॥ तुङ्गतरङ्गे गङ्गे ॥

तुङ्गतरङ्गे गङ्गे जय । तुङ्गतरङ्गे गङ्गे॥
कमलभवाण्ड करण्डपवित्रे । बहुविध बन्धच्छेदलवित्रे ॥१॥
दूरीकृतजन पापसमूहे । पूरित कच्छपगुच्छ ग्राहे ।
परमहंस गुरुभणित चरित्रे । ब्रह्मा विष्णु शङ्कर नुतिपात्रे ॥२॥

॥८॥

॥ भजरे गोपालम् ॥

भजरे गोपालं मानस । भजरे गोपालम् ॥
भज गोपालं भजित कुचेलम् । त्रिजगन्मूलं दितिसुतकालम् ॥१॥
आगमसारं योगविचारम् । भोगशरीरं भुवनाधारम् ॥२॥
कदनकठोरं कलुषविदूरम् । मदनकुमारं मधुसंहारम् ॥३॥
नतमन्दारं नन्दकिशोरम् । हतचाणूरं हंसविहारम् ॥४॥

॥९॥

॥ मानस सञ्चर रे ॥

मानस सञ्चर रे ब्रह्मणि । मानस सञ्चर रे ॥
मदशिखिपिञ्छालङ्कृत चिकुरे । महनीय कपोल विजितमुकुरे ॥१॥
श्रीरमणी कुचदुर्ग विहारे । सेवकजन मन्दिर मन्दारे ।
परमहंसमुख चन्द्रचकोरे । परिपूरित मुरलीरवधारे ॥२॥

॥१०॥

॥ पूर्णबोधोऽहम् ॥

पूर्णबोधोऽहम् ।
सदानन्द पूर्णबोधोऽहम् ॥
वर्णाश्रमाचार कर्मादिदूरोऽहम् ।
स्वर्णवदखिल विकारगतोऽहम् ॥१॥
प्रत्यगात्माहं प्रवितत सत्य घनोऽहम् ।
श्रुत्यन्त शतकोटि प्रकटितब्रह्माहम् ।
नित्योऽहम् अभयोऽहम् अद्वितीयोऽहम् ॥२॥
साक्षिमात्रोऽहं प्रगलितपक्षपातोऽहम् ।
मोक्षस्वरूपोऽहं ओङ्कारगम्योऽहम् ।
सूक्ष्मोऽहम् अनघोऽहम् अद्भुतात्माहम् ॥३॥
स्वप्रकाशोऽहं विभुरहं निष्प्रपञ्चोऽहम् ।
अप्रमेयोऽहं अचलोऽहमकलोऽहम् ।
निष्प्रतर्क्याखण्डैकरसोऽहम् ॥४॥